Ancient Vedic Mantras and Rituals

Ekadashi Vrat | एकादशी का व्रत क्यों रखा जाता है? | PDF

एकादशी की शुरुआत के बारे में पौराणिक कथा के अनुसार, मार्गशीर्ष माह में कृष्ण पक्ष की एकादशी को भगवान विष्णु के शरीर से एकादशी देवी का जन्म हुआ था। इसलिए मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष की एकादशी को उत्पन्ना एकादशी के नाम से जाना जाता है। जब भगवान विष्णु राक्षस मुर से युद्ध करके थक गए तो उन्होंने बद्रिकाश्रम गुफा में जाकर विश्राम किया। मुर भगवान विष्णु का पीछा करता हुआ बद्रिकाश्रम पहुंच गया। मुर ने सोते हुए भगवान को मारने की कोशिश की, तब भगवान विष्णु के शरीर से एक देवी का जन्म हुआ और इस देवी ने मुर को मार डाला।

देवी के कार्य से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने कहा, “देवी, आपका जन्म मार्गशीर्ष माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी को हुआ है, इसलिए आपका नाम एकादशी होगा। उन्होंने यह भी कहा कि आज से वर्ष की प्रत्येक एकादशियों को मेरे साथ तुम्हारी पूजा की जायेगी और जो कोई भी इस एकादशी का व्रत करेगा वह पापों से मुक्त हो जायेगा।

प्रत्येक 15 दिन में (पूर्णिमा और अमावस्या के अगले दिन) एकादशी आती है। यह वह समय है जब शरीर एक निश्चित चक्र से गुजरता है। इस समय शरीर को भोजन की विशेष आवश्यकता नहीं होती या अन्य दिनों की तुलना में कम होती है। इस समय शरीर हल्का और स्वच्छ रहना चाहता है। ऊर्जा भीतर की ओर प्रवाहित होना चाहती है।

एकादशी का महत्व:

पुराणों के अनुसार, एकादशी को “हरि दीन” और “हरि वासर” के नाम से भी जाना जाता है। यह व्रत वैष्णव और गैर-वैष्णव दोनों समुदायों द्वारा मनाया जाता है। कहा जाता है कि एकादशी व्रत का फल हवन, यज्ञ, वैदिक अनुष्ठान आदि से भी अधिक होता है। ऐसी भी मान्यता है कि इस व्रत से हमारे पूर्वज स्वर्ग चले जाते हैं। एकादशी व्रत(Ekadashi Vrat) के महत्व का वर्णन स्कंद पुराण में भी किया गया है। इस व्रत को करने वाले किसी भी व्यक्ति को एकादशी के दिन गेहूं, मसाले, सब्जियां आदि खाने से मना किया जाता है।

एकादशी व्रत रखने के फायदे:

- एकादशी का व्रत करने से व्यक्ति स्वस्थ रहता है। असाध्य से असाध्य रोग भी ठीक हो सकते हैं।
- आपको भूत, पिशाच और राक्षसों से भी छुटकारा मिलेगा।
- आप जीवन की सभी चिंताओं से मुक्त हो जाते हैं। व्यक्ति को आर्थिक परेशानियों से मुक्ति मिलती है और जीवन में सुख-समृद्धि प्राप्त होती है।
- व्यक्ति मोह और दासता से मुक्त हो जाता है और जीवन में किए गए सभी पापों से मुक्त हो जाता है।
- बेटा पैदा होता है और खुशियां जाग जाती हैं.

एकादशी का व्रत शीघ्र करने से अश्वमेघ यज्ञ के समान पुण्य प्राप्त होता है और सभी कार्यों में सफलता मिलती है।
दरिद्रता दूर होगी और शत्रुओं का नाश होगा।
एकादशी व्रत (Ekadashi Vrat) करने से पितरों को अपमान से मुक्ति मिलती है।

एकादशी तिथि पर ना करें इसका सेवन:

आपको एकादशी के दिन गलती से भी चावल नहीं खाना चाहिए, भले ही आप व्रत न कर रहे हों। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, जो व्यक्ति एकादशी तिथि के दिन चावल खाता है, वह अगले जन्म में रेंगने वाले के रूप में जन्म लेता है। हालाँकि, यदि आप द्वादशी तिथि के दिन चावल खाते हैं, तो आपको इस बीमारी से भी छुटकारा मिल जाएगा। एकादशी के दिन तुलसी के पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए। यदि घर में बच्चे या बुजुर्ग लोग हैं जो एकादशी का व्रत नहीं कर रहे हैं तो उन्हें द्वादशी के दिन पत्ते तोड़ लेने चाहिए।

Related Articles

Ekadashi Vrat

Nirjala Ekadashi

THANKS FOR READING

READ MORE RELIGIOUS CONTENT ON

vedicprayers.com

VEDIC PRAYERS

Follow us on: